THE
HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

स्वस्थ करने के अभ्यास पर

On the Healing Practice

Author – Mark Swinney

The Christian Science Journal Vol. 128, No. 05, May, 2010

क्रिश्चियन सायँस अध्यापकों ने, क्रिश्चियन सायँस उपचारक बनने के लिए की गई कार्यशालाओं में अकसर पूछे जाने वाले सवालों का जवाब दिया।

प्रश्न :– मैं क्रिश्चियन सायँस से प्यार करता हूँ और दूसरे लोगों के लिए प्रार्थना करने वाले विचार से प्यार करता हूँ। मुझे क्या चीज़ पीछे धकेलती है, यद्यपि मैं ऐसा नहीं सोचता कि मेरे पास रोगी को कहने के लिए सही शब्द होंगे। जो विशेष शब्द मैं किसी को कहता हूँ, कितने महत्वपूर्ण हैं?

उत्तर :– जबकि एक क्रिश्चियन सायँटिस्ट का एक रोगी के लिए कोमल प्रेम, उसके विचारों को बढ़ावा देने का एक मौखिक भाव हो सकता है, असल में यह केवल शब्द नहीं हैं जो अपने आप में उपचार करते हैं। यह ख्रीस्तीय संदेश हैं जो कि उपचारक और रोगी को **परमेश्वर** द्वारा प्रदान किए जाते हैं जो कि वास्तव में आराम देते हैं। क्राइस्ट परिवर्तनशील विचारों के लिए छलांग मारने वाला तख्ता है जो स्वस्थ करता है। मुझे कई बार ऐसा सोचना बहुत सहायक लगा कि क्राइस्ट **परमेश्वर** की आवज है। मेरी बेकर एडी ने सॉंयस एण्ड हैल्थ (पृष्ठ 332) में व्याख्या की है कि ''क्राइस्ट अच्छाई की बात करने वाला सच्चा विचार है। एक दिव्य संदेश जो **परमेश्वर** से मानव तक आता है, इन्सानी चेतना से बात करते हुए''।

यह ''दिव्य संदेश'' है जो कि क्रिश्चियन सॉंयस के सार्वजनिक अभ्यास को इसका तत्व और आधार देता है। मैने कभी भी बातें कर के उपचार नहीं किया। एक केस से दूसरे केस तक मुझे लगा कि प्रभावशाली प्रार्थना तब तक नहीं हो सकती जब तक मै शाँत न रहूँ और **परमेश्वर** का कहा न सुनूं और उस तरफ न बढ़ूँ कि रोगी के बारे में क्या सोचना है।

जब मैं पहली बार सार्वजनिक अभ्यास पर था – मुझे नहीं याद कि तब मैं जरनल में विज्ञापन दे रहा था – एक दिन बहुत ही खुशमिज़ाज स्त्री ने मुझे अपने लिए प्रार्थना करने के लिए कहा। जब वह अपनी बीमारी के बारे में सावधानी पूर्वक ब्यौरा दे रही थी, मैं सहज ही किसी चीज़ से प्रेरित हो गया जो **परमेश्वर** ने मुझे अपने हृदय में उसके बारे में बताया। जब उसने बात खत्म की, मैने बिल्कुल वही व्याख्या की जो कि मैने **परमेश्वर** से सुना। अपनी आवज में बिना किसी आशा के उसने कहा ''अच्छा, ठीक है''।

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

अगले दिन उसने दोबारा सहायता के लिए कहा, यह कहते हुए कि उसको कोई फर्क नहीं पड़ा। मैने एक बार और व्याख्या करने के लिए अतिरिक्त ध्यान रखा मैं जानता था कि इस मामले को सुलझाने के लिए वही आध्यात्मिक विचार समाधान लाएगा। अगले दिन उसने मुझे बताया कि वह और भी ज्यादा बीमार थी। इस बार उसकी कॉल के आने की उम्मीद में मैने बिल्कुल वही तैयारी की जो मैं उसे बताने वाला था। मैने रंगबिरंगी उदाहरणों और स्पष्ट व्याख्याओं के साथ योजना बनाई वह प्रेरणादायक विचार उसे देने के लिए जो उसकी सहायता कर सकता था। अगले दिन उसने मुझे सूचित किया कि उसने मेरे साथ काम करना बन्द कर दिया था।

कुछ सप्ताह बाद मेरा उसके साथ सामना हो गया और वह वहुत खुश थी। उसने उल्लासपूर्ण बताया, ''मैं हाल ही में स्वस्थ हो गई हूँ,'' और तब उसने एक अद्भुत प्राकट्य का वर्णन किया जो उसके साथ हुआ–एक विचार जो उसे आया, बिल्कुल वैसा ही उसके साथ हुआ, वही मुख्य बात जो मैं उसे हर समय बताने की कोशिश कर रहा था। निःसन्देह मैने नहीं कहा ''मैने तुम्हें यही कहा था।'' मैं उसके साथ आनन्दित हुआ। उसने मुझे नहीं सुना जब मैने उस विचार को ध्यानपूर्वक बताया था–वह इससे बेखबर दिख रही थी, अभी तक, ख्रीस्तीय विचार जिसकी उसे जरूरत थी उस तक पहुँच चुका था और उसके डर को समाप्त कर चुका था।

छोटा महसूस करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि यह मेरी प्रार्थना थी, न कि कुछ उत्साहपूर्ण शब्द, जो कि वास्तव में बाद में उसके पास थे। शुरू में आध्यात्मिक सारतत्व जो कि मैने उसको बताए थे, शब्दों में खो गए थे। **परमेश्वर** की शक्ति का गहरा एहसास एक प्रेरित विचार को आधारभूत बनाना ही प्रार्थना का महत्वपूर्ण अंश है। ''क्रिश्चियन साँयस के प्रभाव जितने महसूस किए जाते है दिखाई नहीं देते।'' साँयस एण्ड हैल्थ वर्णन करती है। ''यह अभी तक सत्य की शांत धीमी आवाज़ है जो खुद का उच्चारण करती है। हम या तो इस कथन से परे जा रहे होते हैं या इसे सुन रहे होते हैं और उन्नत हो रहे होते हैं। (पृष्ट 323)

मान लो आप एक ठण्डे कमरे में दूसरे लोगों के साथ थे। यदि आप चाहते तो आप भट्ठी की तरफ जा सकते थे और आग जला सकते थे, आप गर्मी पा लेते, और साथ ही कमरे में उपस्थित बाकी लोग भी। प्रार्थना इसी तरह से काम करती है जब ख्रीस्तीय प्रेरणा आपको गर्मी देती है, आपके संसार में भी हर कोई उसे महसूस करता है।

यदि आप ठण्डे कमरे में घूमते और लोगों से केवल यह कहते, ''आग गर्म होती है। आप जानते हो आग गर्म होती है,'' किसी को भी कोई गर्मी महसूस नहीं होगी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता यदि आप अपने पैर जोर से पटकते और अपनी ऊँची आवाज में सबको घोषणा करते कि आग गर्म होती है। केवल एक वास्तविक जलने वाली आग ही चीज़ो को गर्म करेगी।

प्रार्थना करते हुए, स्वस्थ करने वाली गर्माहट क्राइस्ट से प्रेरित होकर आती है। प्रेरणा, बुद्धिमता से हमारे निवेदन का जवाब है। ''हे चरवाहे, मुझे बताओ कैसे जाना है,'' (मेरी बेकर एडी की क्रिश्चियन साँयस हिमनल 304) हम अपने हृदयों में प्रेम महसूस करते हैं। प्रत्येक विशेष प्रेरित विचार के साथ जिससे **परमेश्वर** हमें आशीषित करता है। हमें अपने स्वंय का और दूसरों का

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

सच्चा, सम्पूर्ण आध्यात्मिक आत्मत्व का नया दृष्टिकोण दिखाया जाता है। जब हम शांतिपूर्वक ग्रहणशील हों और सहायता के अपने निवेदन पर परमेश्वर की आवाज़ सुनें।

मैने पाया कि सुनना, परन्तु परमेश्वर के कहे अनुसार थोड़ा सा भी कार्य न करना प्रार्थना नहीं है। सुनना और दिव्य प्रेरणा पर अमल करना एक क्रिश्चियन को बनाता है। मैं कभी भी बीमारी, सीमितता, पाप और मृत्यु की तरह दिखाई देने वाले भय तथा इनके साथ जाने वाले नश्वरता के भ्रमों के पार नहीं जा पाया, बिना इस पर कार्य करने की और इशारा किए जो कुछ मैने परमेश्वर से सुना था। हम सत्य को मौखिक रूप से दांए या बाए दोहराते हैं हम तब तक सच्ची प्रार्थना नही कर रहे हैं जब तक ख्रीस्तीय प्रेरणा हमारे विचार में जगह नहीं ले लेती और हम इसे स्थायी रूप से हमारी संभावनाओं और कार्यों को परिवर्तित करने की स्वीकृति नहीं दे देते।

हाँ, यह निश्चित ही अच्छा है कि अपने सहभागी आदमी या औरत को प्रोत्साहित और प्रसन्न किया जाए, परन्तु केवल पुरानी कहानियाँ ही एक व्यक्ति को बीमारी से आजाद नहीं करेंगी जैसे कि इन्सानी शब्द एक ग्लेश्यिर को भी पिघला नहीं सकते। क्रिश्चियन साँयस एक बोलता हुआ उपचार नहीं है, केवल परमेश्वर की शक्ति और वार्तालाप हैं जो स्वस्थ करते हैं।

इसे देखकर मुझे बहुत सहायता मिली, किसी आश्चर्यजनक बात को जो कि परमेश्वर की आवाज़ में सुनी जा सकती थी, उसे केवल विजयी शब्दों से बदलने के लिए प्रलोभित न होने में। नास्तिक गरजे, साम्राज्य हिल गए : उसने आवाज दी, धरती पिघल गई।(भजनसंहिता 46:6)

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.